पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान डिप्लोमा पाठ्यक्रम

अध्ययन केन्द्र : वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे (VSM-Pune)

विश्वविद्यालय : केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2024-25

पञ्चम पत्र

प्रदत्तकार्य – महाभारत के प्रसिद्ध समीक्षात्मक संस्करण के प्रस्तावना (Prolegomena) के आधार पर इस कार्य में प्रयुक्त सम्पादन प्रविधि को विश्लेषण

नाम – शरद चंद्र

नामाङ्कन संख्या - PD/24-25/1018

महाभारत के प्रसिद्ध समीक्षात्मक संस्करण की प्रस्तावना (PROLEGOMENA) के आधार पर प्रयुक्त सम्पादनप्रविधि-

* भूमिका सहित महाभारत की समीक्षित आवृत्ति का परिचय

* महाभारत के पाठ का स्वरूप-- जय संहिता, भारत संहिता, महाभारत संहिता

* V.S. SUKATHANKAR के शब्दों में प्रस्तावना(PROLEGOMENA)

* महाभारत की दो पाठ परंपराएं- उत्तरी वाचना और दक्षिणी वाचना

* महाभारत की उत्तरी वाचना और दक्षिणी वाचना पाठ परंपराओं में भेदक बिन्दु

* महाभारत की समीक्षित आवृत्ति का पूर्व इतिहास

* समीक्षित आवृत्ति बनाने का प्रयोजन एवं लक्ष्य

* महाभारत की समीक्षित आवृत्ति की समीक्षणीय सामग्री

* उपयोग में ली गई पांडुलिपियों का विवरण

* आदिपर्व की पांडुलिपियों का वंशवृक्ष

*Prolegomena के आधार पर महाभारत के समीक्षात्मक संस्करण की संपादन प्रविधि

*१•अनुसंधान २• संशोधन एवं शाखाभेद निर्णय ३ • संस्करण एवं पाठ सुधारणा ४• उच्चतर समीक्षा

भूमिका- संस्कृत-पालि-प्राकृत ग्रन्थों की पाठालोचना की चर्चा का आरम्भ महाभारत की समीक्षित आवृत्ति से ही करना चाहिए। उसी के प्रथम बॉल्युम (आदिपर्व) की प्रस्तावना में प्रोफेसर वी.एस.सुकथंकर जी ने भारतीय ग्रन्थों की पाठालोचना की जो पूर्वपीठिका लिखी है वह आज भी मार्गदर्शक है। अतः महाभारत की इस आवृत्ति का परिचय किये बिना आगे बढना सर्वथा अनुचित माना जायेगा|

महाभारत की पांडुलिपियों से समीक्षित पाठ संपादन:

- 11वीं इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ ओरिएंटालिस्ट, पेरिस 1897 में विंटरनित्स ने महाभारत की समीक्षित आवृत्ति की मांग की थी |1899 की 12वीं परिषद में **“संस्कृत एपिक टेक्स्ट सोसायटी** ” की स्थापना हुई और बर्लिन-वियेना ने फंडिंग एकत्र किया|
- 1908 में हेनरिच ल्युडर्स ने आदि पर्व के 67 श्लोकों की निदर्शात्मक समीक्षितावृत्ति तैयार की जिसकी पादटिप्पणी में पाठांतर दिए तथा ब्रह्मा-गणेश का प्रक्षिप्त संवाद परिशिष्ट में दिया|
- विंटरनित्स ने 20 वर्षा के बाद फिर वाही मांग की लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के कारण रूकावट आ गई|

  श्री रामकृष्णगोपाल भंडारकर ने 1919 में **संतुलन पत्रिका** में ‘नारायणं नमस्कृत्य.......... लिखा तथा महाभारत कि समीक्षित आवृत्ति के प्रोजेक्ट का शुभारम्भ करवाया |

1923 मे नारायण बापूजी उटगीकर ने विराट्पर्व कि निदर्शात्मक आवृत्ति निकाली और भारत,यूरोप एवं अमेरिका के विद्वानो के प्रसंशनीय अभिप्राय दिये | प्रधान संपादक प्रो. वी.एस.सुकथंकर द्वारा आदिपर्व का संशोधित संस्करण ई. 1933 और 22 सितम्बर 1966 को प्रकाशित हुआ। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने महाभारत के 18वें स्वर्गारोहण पर्व को

प्रकाशित करके इस परियोजना के पूरा होने की घोषणा की। इस संस्करण के 19 खंडों में 89,000 श्लोकों का अधिकृत पाठ है (कुल पृष्ठ-संख्या 15,000+ है)। तत्पश्चात महाभारत के खिलपर्व के समान हरिवंश पुराण का संशोधित संस्करण भी 1966 से प्रकाशित हुआ। इसमें चार पर्व हैं, और दो खंडों में कुल 1711 पृष्ठ हैं। फिर महाभारत के 89,000 श्लोकों के प्रतीकों की पाद-सूची (जिसमें 3,60,000 पाद-टिप्पणियाँ हैं) पृष्ठ में दी गई है। तीसरी रोचक बात यह है कि महाभारत के इस प्रामाणिक वाचन के आधार पर परिशिष्ट खंड में उन शब्दों की अनुक्रमणिकाएँ भी प्रकाशित की जा रही हैं जो भारत के सांस्कृतिक अध्ययन में सहायक हो सकती हैं। परिणामस्वरूप, श्री मधुकर अनंत मेंहदले ने दो खंडों को संपादित करके प्रकाशित किया है। इनमें महाभारत में वर्णित पर्वतों, नदियों, साँपों आदि के नाम शामिल हैं। इसी प्रकार, देशों, राज्यों, शहरों, गाँवों, हथियारों, व्यक्तियों के नाम आदि के संदर्भ शामिल किए गए हैं।

महाभारत के पाठ का स्वरुप: महाभारत के आदिपर्व के अनुक्रमणिकापर्व 1 में 77 से 83 श्लोको में ही इस मिथक को वर्णित करनेवाले निम्नोक्त श्लोक प्राप्त होते हैः- **लेखको भारतस्यास्य भव त्वं गणनायक। मयैव प्रोच्यमानस्य मनसा कल्पितस्य च ॥ श्रुत्वैतत्प्राह विघ्नेशो यदि मे लेखनी क्षणम्। लिखतो नावतिष्ठेत, तदा स्यां लेखको ह्यहम्॥ व्यासोऽप्युवाच तं देवमबुद्धा मा लिख क्वचित्। ओमित्युत्क्त्वा गणेशोऽपि तदा बभूव किल लेखकः॥**

सर्वज्ञोऽपि गणेशो यत् क्षणमास्ते विचारयन्। तावश्चकार व्यासोऽपि श्लोकानन्यान् बहुनपि ॥

महर्षि वेदव्यास ने गणेशजी से जो युद्धकथा लिखवाई थी, उसका नाम **जयसंहिता** था। क्योंकि महाभारत के पहले ही मंगलाचरण श्लोक में कहा है कि- नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं वाचम् ततो **'जयम्"** उदीरयेत् ।। इस लघुकाय (8000 श्लोक वाले) "जय" नामक काव्य में केवल कौरव-पाण्डवो के जय-पराजय की कथा लिखवाई गई थी। तत्पश्चात व्यास के शिष्य वैशम्पायन ने जब उस काव्य में भरतवंशी कथा को नयी जोडी तब उस

संहिता को भारत-संहिता ऐसा नाम दिया गया। तथा उसका कलेवर वृद्धिगत होकर 24.000 तक पहुँचा। तीसरे सोपान पर, सूत पौराणिक लोगों ने उसको धर्मकाव्य बनाने के लिए अनेक आख्यान-उपाख्यानों का प्रक्षेप किया,जिसके कारण उसका कलेवर एक लाख श्लोकों वाला बन गया। उसो विश्वज्ञानकोश बनाने के आशय से इसमें विभिन्न कालखण्ड में विभिन्न प्रदेश के कथाकारों ने निरन्तर बहुत कुछ प्रक्षिप्त किया है। जैसे कि उसमें अनेक शास्त्रों के सार, राजाओं की वंशावलियाँ, वन-उपवन एवं यज्ञादि की कथाएं भी जोडी गई हैं। इस विराटकाय वीरचरित काव्य (Epic) को आज महाभारत संहिता के नाम से जाना जाता है। सारांशतः मूल में व्यास ने जिस जय-काव्य की रचना की थी उसके, कालक्रम से तीन संस्करण तैयार हुए: 1. जय, 2. भारत एवं 3. महाभारत।

Declaration in the Prolegomena:

A critical edition of the Mahabharata in the preparation of which all important versions of the Great Epic shall have been taken into consideration & all important manuscripts collated & turned to account. Since all divergent readings of any importance will be given in the critical notes, printed at the foot of the page, this edition will, for the first time, render it possible for the reader to have before him the entire significant manuscript evidence for each individual passage. (by V.S.Sukathankar)

महाभारत की दो पाठ-परम्पराए: उत्तरीवाचना एवं दक्षिणी वाचना

प्रोफ़ेसर वी.एस.सुकथंकरजी ने कहा है कि महाभारत अतिप्राचीन काल से ही दो अलग अलग पाठ-परम्पराओं में संक्रमित होता चला आ रहा है–1.उत्तर भारत की पाठ परम्परा 2. दक्षिण भारत की पाठ-परम्परा। ये दोनों ही परम्पराएं परस्पर से बहुत पृथक है इस बात का खयाल तब आया था कि जब श्रीप्रतापचन्द्र रॉय ने ई.स.1883-1896 में "दातव्य भारत कार्यालय' (कोलकाता से) की ओर से महाभारत का क्रमशः प्रकाशन किया। उसके बाद ई.स. 1885 में द्रविडी हिन्दुओं ने एक सभा का आयोजन किया और उसमें श्रीनिवास शास्त्री ने

उत्तर भारत में से प्रकाशित हुए महाभारत के पाठ की कटु शब्दों में आलोचना की। उन्होंने कहा की प्रतापचन्द्र रॉय की आवृत्ति क्षतिपूर्ण है और पाठक की भावनाओं को आहत करने वाली है। एवमेव उतर भारत के शक्ति-सम्प्रदाय को माननेवालों के लिए जो प्रतिकुल हो ऐसे अद्‌वैत वेदान्त तथा विशिष्टाद्‌वैत के सिद्‌धान्त को रॉय की आवृत्ति में समाविष्ट नहीं किये गये है। श्रीनिवास शास्त्री ने, इस सन्दर्भ में ऐसा सुझाव भी दिया है कि उत्तर भारत की आवृत्ति प्रकाशित करने से पहले श्री प्रतापचन्द्र रॉय को दक्षिण भारत से महाभारत की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त करके तुलनात्मक अभ्यास करना चाहिये था। इस तरह से 1883 में ही यह मालूम हो चुका था कि महाभारत की "उत्तरी वाचना" एवं "दक्षिणी वाचना" के पाठ परस्पर से भिन्न ही है। इस आलोचना के प्रत्युत्तर में श्रीप्रतापचन्द्र रॉय ने कहा था कि महाभारत का कोई भी विद्‌वान् कितनी भी सावधानी से प्रकाशन करेगा तो भी, वह भारत देश के सभी प्रदेशों के पाठकवर्ग को एकसमान रूप से संतोष नहीं दे पायेगा। महाभारत का कौन सा भाग मौलिक है, या कौन सा भाग प्रक्षिप्त है ?- यह कुछ अपवादों को छोड कर, निश्चित करना आसान नहीं है। इस प्रतिवाद का समर्थन करते हुए प्रॉफे. वी. एस. सुकथंकर जी ने कहा है कि श्रीप्रतापचन्द्र रॉय की यह टिप्पणी अभी भी सही है॥

महाभारत पाठ परम्परा के विभेदक बिन्दु -

- उत्तरी वाचना मे 18 पर्व आये हुए है लेकिन दक्षिणी वाचना मे 24 पर्व आये हुए है |
- उत्तरी वाचना के आदिपर्व में आदिपर्व-आस्तिकपर्व-सम्भवपर्व नामके तीन उपपर्व आते हैं परन्तु दक्षिणी वाचना के आदिपर्व के पाठ में ये तीन उपपर्व नहीं हैं, बल्कि तीनों ही स्वतन्त्र पर्व है ।
- उत्तरी वाचना के आदिपर्व के कुल श्लोकों की संख्या 8460 हैं लेकिन दक्षिणी वाचना के आदिपर्व के कुल लोकों की संख्या 9984 है|

- उत्तरी वाचना में लघुपाठ संचरित हुआ तथा दाक्षिणात्य वाचना में बृहत् पाठ संचरित हुआ|
- उत्तरी वाचना का पाठक बहुत कम जानेगा लेकिन दक्षिणी वाचना के पाठक की सभी जिज्ञासाओं का शमन होगा|
- उत्तरी वाचना के पाठ में व्यास जी के मातामह का नाम नहीं मिलेगा लेकिन दक्षिणी वाचना में सत्यवती-मत्स्यगंधा के पिता उच्चैःश्रवस् है|
- उत्तरी वाचना के कथा-प्रसंगों का ग्रथन व्यवस्थित नहीं है परन्तु दक्षिणी वाचना के कथा-प्रसंगों का ग्रथन सुव्यवस्थित किया है ।
- उत्तरी वाचना में श्रृंगारिक वर्णन नहीं मिलते हैं लेकिन दाक्षिणात्य वाचना में श्रृंगारिकनिरूपण पर्याप्त मात्रा में मिलता है- शुभ्रं हि जघनं तस्या: सुवर्णमणिमेखलम् । न ततर्प मुदा भीमसेन ।।

महाभारत की समीक्षितावृत्ति की समीक्षणीय सामग्री (Critical Apparatus)

भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्युट, पुणे के द्वारा प्रकाशित महाभारत के आदिपर्व की समीक्षित आवृत्ति में जिन पाण्डुलिपियाँ एवं नीलकण्ठादि की टीकाएं, अन्य भाषाओं में हुए रूपान्तरण, या भाषान्तरादि के रूप में रही "सहायक सामग्री" (Testimonial) को उपयोग में ली गई है, उन सब का पूरी बारिकी के साथ विवरण दिया गया है। उनमें से कतिपय सामग्री का यहाँ निर्देश किया जाता हैः- **(क)** श्री गणपत कृष्णजी के द्वारा शक संवत 1799 (ई.स. 1877) में, मुंबई से प्रकाशित संस्करण के पाठ को "बहुमान्य पाठ" (Vulgate) (लोक में प्रचलित हुआ पाठ) के रूप में स्वीकारा गया है। तथा उसी पाठ को प्रत्येक संतुलन-पत्रिका की प्रथम पंक्ति में रक्त वर्णं स्याही से लिखा गया है। एकत्र की गई पाण्डुलिपिओं में प्राप्त हो रहे पाठान्तर एवं अशुद्धियाँ को अक्षरशः उसके नीचेवाली पंक्तिओं में लिखी गयी हैं। **(ख)**प्रत्येक संतुलन-पत्रिका की दाहिनी ओर रखे गये चार ईंच के कॉलम में

मार्जिनल पाठसुधारादि का समावेश किया गया है। यदि प्रक्षिप्तांश लम्बे होते हैं तो उन सभी श्लोकों को एक अलग "शोधपत्र" के रूप में लिख कर, उसी संतुलन-पत्रिका के पीछे जोड दिये गये हैं। आदिपर्वन् के सम्पादन में 235 पाण्डुलिपियाँ उपयोग में ली गई थी ।इनमें से 3 शारदालिपि में, उनमें से एक प्राचीनतम है ।107 देवनागरी लिपि में लिखी हुई थी,32 बंगाली में, 5 नेवारी लिपि में, 1 मैथिली लिपि में,31 ग्रन्थलिपि में,28 तेलुगु लिपि में, 26 मलयाळम लिपि में,1 कनड में, 1 नन्दीनागरी में लिखी गई थी ।इन पाण्डुलिपियों में समग्र देश का प्रतिनिधित्व था ।इनमें से 70 पाण्डुलिपियाँ पूर्ण या आंशिक रूप में संतुलन-पत्रिकाओं पर निर्दिष्ट की गई है|

महाभारत की संतुलन-पत्रिका में जिन 16 पाण्डुलिपियों के पाठान्तर एवं अशुद्धियाँ लिखी गई है, उन पाण्डुलिपियों का लेखन-काल 16वीं शती से लेकर 19वीं शती का है। तथा उन सोलह प्रतियों में से नेवारी प्रति प्राचीनतम है, जिसका लेखन-काल 1511 ई.स. लिखा गया है। तथा उसको N-3 संज्ञा दी गई है। उसमें बहुमान्य पाठ (Vulgate) के रूप में मुंबई से 1877 में प्रकाशित पाठ को लिया गया था ।तथा उसके पाठ को प्रथम पंक्ति में रक्त वर्णी श्याही से लिखा गया था। उसके नीचे अन्यान्य मुख्य पाण्डुलिपिओं के अशुद्ध पाठ, पाठान्तर, प्रक्षेपादि लिखे गये थे । संतुलन-पत्रिका के दोनों तर्फा हांशिये में पाण्डुलिपियों को सांकेतिक नाम, रिमार्क आदि दिये थे ।

उपयोग में ली गई दक्षिणी वाचना एवं उत्तरी वाचना की पांडुलिपियों का विवरण: आदिपर्व के लिए उपयोग में ली गई पाण्डुलिपियों (समीक्षणीय सामग्री) में से सब का यहा विवरण देना मुश्किल है। स्थलसंकोच के कारण हम उनमें से निदर्श के रूप में, निम्न पाण्डुलिपियों का विवरण प्रस्तुत हैं :-

S'1- Poona, Bombay Govt. Collection, No. 159, 1875-76.

Ko- Poona, Bombay Govt. Collection, (deposited at the B.O.R.L No.229 of 1895-1902, Dated: Vikram Samvat 1795 (ca. A.D. 1739)

K3 - Baroda, Oriental Institute Library, No.632, Dated: V. Sam. 1575 (a A.D.1519

N3- Nepal, private possession, Nepal Sam. 632 (ca A.D. 1511)

M8 - Malabar Poomull Mana Library, No. 297, Dated: Kollam 1017, (ca A.D. 1842).

(1) काश्मीर प्रदेश में शारदा-लिपि में लिखी पाण्डुलिपि के लिए **(S'1**) ऐसा सांकेतिक नाम **(Siglum**) निर्धारित किया गया है। यह पाण्डुलिपि भूर्जपत्र पर लिखी गई है और बोम्बे गवर्मेन्ट कलेक्शन में से गृहीत है। (इस कलेक्शन की सारी पाण्डुलिपियाँ 1875-76 के वर्षों में जोर्ज व्युहर ने काश्मीर एवं राजपुताना से एकत्र की थी। तथा वर्तमान में इनका संरक्षण भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में किया गया है।) व्युहर ने इस प्रति का क्रमांक 159 दिया है। इसमें 114 फोलियो (यानी 228 पृष्ठ) है। इसमें कुछ भाग खण्डित भी हुए है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर 24 पंक्तियाँ है और प्रत्येक पंक्ति में 36 अक्षर लिखे गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ की ईयत्ता 12"x 9" है। इसके प्रत्येक पृष्ठ के बांयी ओर मार्जिन छोडा है और उसके अधस्तात में पृष्ठ-क्रमांक लिखा है। यहाँ पर ग्रन्थ-नाम के रूप में महा) (महाभारत) ऐसा नहीं लिखा है, किन्तु पर्व का नाम-संकेत दिया है। जैसे कि- आदि०॥

इस पाण्डुलिपि के लहिया के द्वारा ही तीनों पर्व (आदिपर्व, सभापर्व और अरण्यपर्व) लिखे गये हैं, यद्यपि आदिपर्व एवं अरण्यपर्व के आरम्भिक अंश खण्डित हुआ है, पृष्ठ 96 की पुनरावृत्ति हुई है। लेखन-कार्य स्वच्छ, सुन्दर और सावधानी के साथ किया गया है। बहुत कम स्थान में शुद्धिकरण किया गया है। कदाचित् अनचित् मार्जिन (हांशिया) में, मूलपंक्ति की क्षतिपूर्ति के लिए,

अक्षरों का निर्देश दिया गया है। इस प्रति में वैशम्पायन उवाच- ऐसा पूर्ण वाक्य नहीं लिखा है, किन्तु "वैशम्पायनः" इतना ही लिखा है। आदिपर्व का अन्त फोलियो 154 पर होता है और वहीं से सभापर्व का आरम्भ किया गया है।

(2) **Ko** = फोलियो 181, प्रति पृष्ठ पर पंक्ति में 15 लेखन किया है। पृष्ठ की ईयत्ता 14. 7 x6.7", लिपि देवनागरी है और पुराने भारतीय कागज पर लिखी हुई पाण्डुलिपि है।

(3) **K3** = यह पाण्डुलिपि गुजरात की ओरिएन्टल इन्स्टीट्युट, बडोदरा से प्राप्त की गई है। देवनागरी में लिखी गई है। विक्रम संवत 1575, श्रावण कृष्णपक्ष, तिथि पंचमी, अभिनन्दन, नागर पंडित कालिदास का पुत्र नानजीक ने लिखी है, संखेटक पुर (संखेडा गाम, वडोदरा के पास)

(4) **N3** = यह पाण्डुलिपि नेवारी लिपि में है, ताडपत्र पर श्याही से लिखी है, उसमें आदिपर्व के उपरान्त सौप्तिक पर्व भी लिखा है। राजगुरु पंडित हेमराज की साहाय्य से प्राप्त हुई थी, लेकिन जल्दी से उस प्रति को वापस लौटानी थी, इस लिए उसका विशेष विवरण नहीं दे पाये हैं।

(5) M8 = इस पाण्डुलिपि में 183 फोलियो है, प्रत्येक पृष्ठ पर पंक्ति में लेखन हुआ है। तथा वह मलयाळम लिपि में लिखी गई है।

समीक्षित आवृत्ति के सभी सम्पादकों से यह अपेक्षित है कि वह प्रस्तावना में उपयुक्त सभी समीक्षणीय सामग्री (Critical Apparatus-1) के रूप में पाण्डुलिपियों का (जैसे उपर बताया है वैसे) बिवरण दें और उपयुक्त की गई सभी पाण्डुलिपियों के पहला और अन्तिम पृष्ठ का फोटोग्राफ भी देखें। तथा दूसरी समीक्षणीय सामग्री (Critical Apparatus-2) के रूप में, जहाँ अधिकृत पाठ रहेगा उसकी पादटिप्पणी में अस्वीकार्य बनें पाठान्तरों एवं लहिया के स्खलनों (अशुद्धियाँ) को लिख दें।।

आदि पर्व की पांडुलिपियों का वंशवृक्ष

आदिपर्व की पाण्डुलिपियों के इस वंशवृक्ष को निरूपित करते हुए प्रॉफे. सुकथंकर जी ने लिखा है कि

(1) **N** - महाभारत की उत्तरी वाचना (Northern Recension), जिसमें से उत्तर भारत के तमाम रूपान्तरण (शारदा, काश्मीरी देवनागरी, नेवारी, मैथिली, बंगाली एवं देवनागरी अवतरित हुए होंगे।

(2) **V** - उत्तर-पश्चिमी प्रदेशों की पाण्डुलिपियों के समूह के कालग्रस्त हुए मूलादर्श प्रति (Archetype) का पाठ होगा। जो अन्य रूपान्तरों की अपेक्षा से लघुतर पाठ (textus simplicior) को सुरक्षित रखनेवाला है।

(3) **K** – यह देवनागरी का एक ऐसा रूपान्तरण प्रदर्शित करता है जो शारदा-काश्मीरी रूपान्तर के साथ सम्बन्ध रखता है। तथा, जो अन्य देवनागरी-पाठ परम्परा से पृथक् ही है।

(4) **Y** - यह चिह्न मध्यवर्ती उपवाचनाओं का उद्गम स्थान दिखा रहा है। जिसमें पूर्व-पश्चिम रूपान्तरों को एकत्र किये गये हैं। यह उत्तर-पश्चिमी एवं दाक्षिणात्य रूपान्तरों के बीच की स्थिति को प्रदर्शित करता है। इसमें पुनरुक्ति सहित के नवीन प्रक्षेप दिखाई रहे हैं। तथा उसमें शाब्दिक पाठभेद

(5) **Σ** - यह पूर्वीय प्रदेशों की पाण्डुलिपियों के कालग्रस्त हुए मूलादर्श (Archetype) को दिखा रही है। जिसमें प्रक्षेप या पाठान्तर नहीं मिलते हैं। (लेकिन बाद में, वे प्रक्षेप एवं पाठान्तर देवनागरी में प्रविष्ट हुए हैं।)

(6) **S** - यह दक्षिण भारतीय वाचना (Southern Recension) को दिखाती है। जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दक्षिण भारत की पाण्डुलिपियों में अवतरित हुई होगी।

उनमें अलंकृत एवं बृहत्पाठ (textus ornatior) संचरित हुआ है। यह दक्षिणी वाचना उत्तरी वाचना की अपेक्षा से बहुत लम्बी है।

(7) **6-** यह तेलुगु एवं ग्रन्थलिपि में लिखी हुई पाण्डुलिपियों का पाठ कालग्रस्त हुए मूलादर्श के पाठ को प्रदर्शित करती हैं। जिसमें भी अनेक भ्रष्टपाठ हैं तथा प्रक्षेप भी मिलते हैं। (यद्यपि मलयाळम पाण्डुलिपियाँ इन सब से मुक्त है।

पाठ सम्पादन की प्रविधियां-

संदोहन पद्धति --संदोहन पद्धति से होने वाले पाठ-सम्पादन की चर्चा करते हैः- पाठ-सम्पादक जब किसी "प्रोक्त" ग्रन्थ की शताधिक पाण्डुलिपियाँ मिलती हो और उन सब में बहुविध पाठान्तरों का जमावडा हुआ हो) तब, वह पाठ-पसंदगी में अपनी रुचि-अरुचि को बीच में न लाते हुए, पाठ-चयन का अन्य ही मानदण्ड उपयोग में लाता है। जैसे कि- उपलब्ध हो रही शताधिक पाण्डुलिपियों में से जो पाठ्यांश बहुसंख्यक पाण्डुलिपियों में एक समान रूप से पाया जाता हो उसको "श्रद्धेय" पाठ मान कर, उसका सम्पादन प्रस्तुत करता है। उक्त मानदण्ड से किये गये पाठ-सम्पादन को अब "वस्तुनिष्ठ" एवं "बहुसंख्यक साक्षिओं से समर्थित" पाठ कहा जायेगा। (बहुसंख्यक पाण्डुलिपियों में प्राप्त हो रहे समान पाठ का ग्रहण करने से पाठ-सम्पादक "आत्मलक्ष्यी पाठ-सम्पादन" के दोषारोपण से अपने को बचा सकता है।) लेकिन, जो पाठ-सम्पादक बहुसंख्यक पाण्डुलिपियों में प्राप्त हो रहे समान पाठ का संदोहन करके, किसी कृति के पाठ का सम्पादन करते हैं उसमें भी एक दोष तो निहित है ही। जैसे कि पाठ-सम्पादक ने जिन बहुसंख्यक पाण्डुलिपियों को अपना आधार बनाया हैं, वे सम्भव है कि परवर्ती काल में लिखी गई हो! और ऐसे पाठ-सम्पादक ने अल्पसंख्यक, किन्तु प्राचीनतम पाण्डुलिपि के पाठान्तरों की उपेक्षा की हो। अतः संदोहन-पद्धति से किया गया पाठ-सम्पादन सही अर्थ में और पूर्ण अर्थ में समीक्षित पाठ-सम्पादन नहीं कहा

जाता है ॥ सारांशतः मधुकर-वृत्ति से किये गये पाठ-सम्पादन में अमुक पाठान्तर की गुणवत्ता को अग्रेसारित की जाती है। दूसरी और संदोहन पद्धति से किये गये पाठ-सम्पादन में अमुक पाठान्तर के साक्षिओं की संख्या को अग्रेसारित की जाती है। लेकिन इन दोनों में प्राचीन से प्राचीनतर पाठ कौन है ?, मूल ग्रन्थकार के नजदीक का पाठ कौन है? इस बिन्दु की घोर उपेक्षा की जाती है। अतः इन दोनों ही पद्धतियों में से किसी का भी आश्रयण करके किया गया पाठ-सम्पादन सदैव विवादास्पद ही बना रहता है ॥

समीक्षित पाठ-सम्पादन के लिए वंशवृक्षपद्धति : जब किसी प्राचीनतम ग्रन्थ की एकाधिक या शताधिक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध होती हैं, तब उसका समीक्षित पाठ-सम्पादन तैयार करने के लिए "वंशवृक्ष पद्धति" (Stemmatic Text Editing) ही सब से अधिक तर्क-संगत मानी गई है। क्योंकि इस पद्धति में न केवल संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक पाण्डुलिपियों का विनियोग होता है, बल्कि ऐसी पाण्डुलिपियाँ देश के प्रायः सभी प्रदेशों से मंगवाई गई होती हे। जिसके कारण एक ही काव्यकृति या शास्त्रग्रन्थ की समग्र देश में फैली सभी पाठ-परम्पराओं का प्रतिनिधित्व उन पाण्डुलिपिओं के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत होता है। इस वंशवृक्ष पद्धति से किया गया सम्पादन पूर्णतया वस्तुलक्ष्यी माना गया है। क्योंकि वह मुख्य रूप से पाण्डुलिपियों पर ही आधारित होता है। प्राप्त की गई अनेक पाण्डुलिपियों में बिखरे पाठान्तर, प्रक्षेप, अशुद्धियाँ इत्यादि को सब से पहले संतुलन-पत्रिकाओं में उतारा जाता है, जिससे एकत्र की गई पाण्डुलिपियों के पारस्परिक आनुवंशिक सम्बन्धों को खोजा जा सकता है। तथा इसी के आधार पर, प्राप्त की गई अनेक पाण्डुलिपियों का एक वंशवृक्ष (pedigree or genealogical table) का अनुमान किया जा सकता है। इस तरह के अनुमानित वंशवृक्ष से पाण्डुलिपियों में संचरित हुए पाठान्तरों में से कौन सा पाठ प्राचीनतर (पूर्वज प्रति का पाठ) है, कौन सा पाठ प्राचीन (अनुज प्रति का पाठ) है या अर्वाचीन (वंशज प्रतियाँ का पाठ) है ? वह सुस्पष्ट हो जाता है।

इसी से आगे चल कर, उन पाण्डुलिपियों का अलग अलग यूथ बनते हैं, और एक ही ग्रन्थ का पाठ कितनी शाखा-प्रशाखाओं में विभाजित हो रहा है- वह निश्चित किया जाता हैं। पाण्डुलिपियों का यही बंशवृक्ष अन्ततोगत्वा, मूल ग्रन्थकार के नजदीक का (Archetype - प्रथम प्रतिलिपि का) पाठ निश्चित करने में बडा सहायक बनता है। इस वंशवृक्ष पद्धति से संस्कृत, ग्रीक एवं लेटिन जैसी प्रशिष्ट भाषाओं (Classical Language) में लिखी गई कृति की समीक्षित आवृत्ति (Critically Edited Text) तैयार करने के लिए प्रशिष्ट भाषाशास्त्रियों के पुराने सम्प्रदाय (Classical Philologists) ने पाठालोचना / पाठ-समीक्षा / पाठ-चिकित्सा (Textual Criticism) की प्रविधि का चार स्तरों में बटवारा किया है। (क) अनुसंधान (Heuristics), (ख) संशोधन एवं वाचना निर्धारण (Recension), (ग) पाठ-सुधारणा एवं संसकरण(Emendation) तैयार करना, तथा (घ) उच्चतर समीक्षा (Higher Criticism) करना ॥

1 -"अनुसन्धान" (Heuristics) नाम का जो प्रथम स्तरीय कार्य है उसमें निम्नोक्त 5 इतिकर्तव्यताएँ प्राप्त होती है:-

(1) सुरक्षित की गई पाण्डुलिपियाँ उनके संग्रहालयों (ग्रन्थभण्डारों), manuscripts library) में जा कर, उनकी स्केन कॉपीयाँ, एवं Web-sites से ऑन-लाईन (fe downloadable) से भी प्राप्त हो रही हो- उन सब को एकत्र करनी चाहिए।

(2) उपलब्ध हो रही पाण्डुलिपियाँ का अभ्यास करके, उनमें से कतिपय का (1. लेखन-कालादि के मानदण्ड से पुरातन काल की, 2. अलग अलग लिपियों की प्रतिनिधिभूत, 3. कम अशुद्धियों वाली, 4. प्रायः पूर्ण या अपूर्ण हो ऐसी) पाण्डुलिपियों का चयन करना चाहिए। (कदाचित उन गुणों वाली पाण्डुलिपियों के अलावा जो बहुत पुरानी न भी हो, खण्डित भी हो, किन्तु कुछ महत्त्वपूर्ण पाठान्तरों वाली कोई पाण्डुलिपि है- ऐसा ध्यान में आये तो अपवाद करके भी उसका भी ग्रहण करना चाहिए।

(3) जिस कृति "पाठ्यग्रन्थ) की हम समीक्षितावृत्ति बनाना चाहते हैं, उसके साथ जुडी सहायक सामग्री" (Testimonial) को भी एकत्रित कर लेनी चाहिए।

(4) तत्पश्चात् एकत्र की गई पाण्डुलिपिओं में प्राप्त हो रहे (सार्थक) पाठान्तर तथा लहिया के अनवधान से पैदा हुई अशुद्धियाँ को "संतुलन-पत्रिकाओं (Collation sheets) में उतारना है।

(5) संतुलन पत्रिकाओं में प्रतिबिम्बित हुए पाठान्तर, त्रुटितांश एवं अशुद्धियों के साम्य-वैषम्य के आधार पर, उन पाण्डुलिपियों के आनुवंशिक सम्बन्धों को पारस्परिक सम्बन्ध तथा पूर्वापर भाव को खोज निकालना है, तथा तदनुसार उनके एक "वंशवृक्ष" का अनुमान भी करना है।

2 - 'संशोधन' (Recension)एवं वाचना निर्धारण नाम के द्वितीय स्तर का कार्य शुरू होता है। इसमें वाचनाओं का निर्धारण किया जाता है। और, "मूल आदर्श प्रति" (Archetype =अनुमानित प्रथम प्रतिलिपि) के पाठ का पुनःस्थापन किया जाता है। वह कैसे किया जाता है ? तो पाठ्यग्रन्थ की सभी पाण्डुलिपियों का वर्गीकरण करके उनको अलग अलग यूथो में निश्चित किया जायेगा। समान पाठ वाले किसी एक यूथ में संचरित हुए पाठ को रूपान्तरण" (Version) कहा जायेगा। तथा एकाधिक समान रुपान्तरणों के एक यूथ को वाचना (शाखा, Recension) नाम दिया जायेगा। तथा, दूसरी तरह के समान रूपान्तरणों वाले दूसरे यूथ को दूसरी वाचना कही जायेगी। इस तरह से, एक ही पाठ्यग्रन्थ कृति का पाठ कितनी वाचनाओं में प्रवाहित हुआ है? वह निर्धारित करना होता है।

तत्पश्चात् उन पाण्डुलिपियों में प्रतिबिम्बित हुआ एक ऐसा पाठ, जो वस्तुतः सुदूर भूतकाल में खडा था, वह "मूल आदर्शप्रति" (Archetype) के पाठ को खोज निकालना (संशोधन करना) चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो- "मूलादर्श-प्रति का पाठ" वह होता है कि जिसमें से ही शुरू हुई पाठ-परम्परा वर्तमान में उपलब्ध हो

रही सभी पाण्डुलिपियों के पाठ की गंगोत्री स्वरूप था। ऐसे अनुमानित मूलादर्शप्रति के पाठ का पुनःस्थापन करना यह द्वितीय स्तर का कार्य होता है

इसी सन्दर्भ में, यह भी निश्चित कर लेना है कि एकत्र की गई पाण्डुलिपियों के वंशवृक्ष के अन्तर्गत दिख रही विभिन्न वाचनाओं में से, किस वाचना का पाठ 1. प्राचीनतम है, या 2. अधिक श्रद्धेय है ?। जैसा कि- महाभारत की समीक्षित आवृत्ति के प्रधान सम्पादक श्री वी.एस. सुकथंकर जी ने दक्षिण भारत की नहीं, किन्तु उत्तर भारत की वाचना को अधिक प्राचीन एवं श्रद्धेय मानी है। क्योंकि महाभारत की दाक्षिणात्य पाण्डुलिपियों में संचरित हुआ पाठ अनेक प्रक्षेपों से भरा वृहत्पाठ है। उसके प्रतिपक्ष में, उत्तर भारत की पाण्डुलिपियों में, लोकसंख्या की दृष्टि से लघुपाठ संचरित हुआ है'। (उदाहरणतया आदिपर्व की उत्तरी वाचना में कुल श्लोक-संख्या 8460 है। उसके सामने दाक्षिणात्य वाचना में 9984 श्लोक-संख्या है)।

3-- **"पाठ-सुधारणा एवं संस्करण"** (Emendation) नामके तृतीय स्तर का कार्य शुरू होता है। पाठ्यग्रन्थ की विभिन्न वाचनाओं में संचरित हुए पाठ में यदि कोई स्थान पर अनेक पाठान्तर मौजुद होते हुए भी, उनमें से किसी की भी अर्थ-संगति नहीं बैठती है तब पाठालोचक को बड़ी सावधानी के साथ, अगतिकतया, पाठ-सुधारणा करने का प्रयास करना होगा। तत्पश्चात् अधिक प्राचीनतर वाचना के अधिक श्रद्धेय एवं ग्राह्य पाठ को पुनःप्रतिष्ठित करना होगा। जिसमें प्रकाशन के योग्य एक व्यवस्थित संस्करण तैयार करना होगा। एवञ्च, अग्राह्य वाचना के पाठान्तर एवं छोटे प्रक्षेपों को पादटिप्पणी में प्रदर्शित करना चाहिए। यदि प्रक्षिप्तांश अध्यायादि पर्यन्त लम्बे है, तो उनको परिशिष्ट में स्थान देना चाहिए । इस तरह से तैयार किये गये पाठ-सम्पादन को "समीक्षितावृत्ति" (Critical Edition) का पाठ कहा जायेगा ॥

4- उच्चतर पाठ-समीक्षा (Higher Criticism): इसमें मूल रचयिता कवि या किसी शास्त्रकार ने उपयोग में लिये पुरोगामी स्रोतों का पृथकीकरण करके, उनको अलग दिखाना होता है तथा आवश्यकता हो तो पाण्डुलिपियों में संचरित हुए पाठ की अवहेलना करके भी, (अर्थात पाण्डुलिपियों के साक्ष्य को दर किनार करके भी, प्राचीनतम या मूलगामी पाठ का निर्धारण करना होगा ॥

समीक्षितावृत्ति बनाने के उपर्युक्त चारों सोपानों को लेकर, महाभारत की समीक्षितावृत्ति के प्रधान सम्पादक श्री बी. एस. सुकथंकर जी ने जो कहा है, वह उनके ही शब्दों में देखना उपकारक होगा:--

The older school of classical philologists distinguished four stages in the work of preparing a critical edition of a classical text: (1) Heuristics, i.e. assembling and arranging the entire material consisting of manuscripts and testimonial in the form of a genealogical tree; (2) Recension, i.e. restoration of the text of the archetype; (3) Emendation, i.e. restoration of the text of the author; and (4) Higher Criticism, i.e. separation of sources utilised by the author. (See: The Prolegomena to the Mahabharata, page 77., BORI, Poona, 1933) (क) एकलौती पाण्डुलिपि वाला ग्रन्थ तथा (ख) एकाधिक पाण्डुलिपियों वाले ग्रन्थों का समीक्षित पाठ-सम्पादन । इन दो सन्दर्भों में कुल तीन तरह की प्रविधियाँ (methods) आधुनिक काल में प्रचलन में हैः

एकल पाण्डुलिपि की समीक्षितावृत्ति बनाने के लिए: - 1. प्रतिलेखन पद्धति से सम्पादन (Copy-Text Editing)

एकाधिक / शताधिक पाण्डुलिपियों में से समीक्षितावृत्ति बनाने के लिए :- 2.मधुकर-वृत्ति से पाठ-सम्पादन(Eclectic Text-Editing)

3. वंशवृक्ष पद्धति से पाठ सम्पादन (Stemmatic method for Critical Text-Editing)

निष्कर्ष---प्रयुक्त संपादन प्रविधि में महाभारत की उत्तरी वाचना और दक्षिणी वाचना की पांडुलिपियों के विषय में वर्णन किया गया है। महाभारत पाठ का निर्धारण- संदोहन पद्धति से किया गया है। वंशवृक्ष पद्धति का विशेष रूप से प्रयोग किया गया है। संपादन प्रविधि में अनुसंधान, संशोधन एवं शाखाभेद निर्णय, संस्करण एवं पाठ सुधारणा, उच्चतर समीक्षा का प्रयोग किया गया है।